International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 7, July 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784

सूचना प्रौधोगिकी एवं महिलायें सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक समाजशास्त्री अध्ययन

नवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, फतेहाबाद, आगरा

सार

सूचना प्रौद्योगिकी हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है, यह प्रभावित करती है कि हम कैसे संवाद करते हैं, काम करते हैं और जानकारी तक पहुँचते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण प्रभाव के बावजूद, इसका अंगीकरण समाज के सभी वर्गों में एक समान नहीं रहा है। विशेष रूप से, महिलाओं की सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाने की संभावना कम रही है और इसे एक्सेस करने और इसका उपयोग करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है। इस शोध पत्र का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी और महिलाओं के बीच संबंधों की जांच करना है। हालांकि, सूचना प्रौद्योगिकी के लाभों को समान रूप से वितरित नहीं किया गया है। महिलाओं को, विशेष रूप से, सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँचने और उपयोग करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है। इन बाधाओं में प्रौद्योगिकी तक पहुंच की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और सांस्कृतिक दृष्टिकोण शामिल हैं जो महिलाओं को प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से हतोत्साहित करते हैं।

परिचय

सूचना प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण चालक रही है, जो लोगों को जानकारी तक पहुँचने और दूसरों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाती है जो पहले असंभव थे। सूचना प्रौद्योगिकी ने सूचना और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके महिलाओं जैसे हाशिए पर पड़े समूहों को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिलाओं के लिए स्वरोजगार की अवधारणा अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि इससे एक तो उनको मातृत्व का दायित्व निभा पाने में परेशानी नहीं होती और दूसरा यह कि वे अपने घरों में ही रहकर काम–काज के समय मेंसे अपनी सुविधानुसार परिवर्तन कर सकती है। इस सम्बन्ध में किए गए अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका ,कैनेडा ,मैक्सिको और अर्जेन्टीना की महिलाओं में घर बैठे ऐसे स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। अतः महिलाओं की आर्थिक स्थिति और सशक्तीकरण में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराये जाएं और ऐसा तभी सम्भव है जब विभिन्न संगठन अपने हित में महिलाओं की दक्षता का सार्थक सदुपयोग करे।

भूदृमण्डलीकरण के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी की रचना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। इसके कारण केवल कारखाना उत्पादन का क्षेत्र ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र में राष्ट्र एवं परराष्ट्र स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए है। अमेरिका की एक निर्माता–विक्रेता कम्पनी से चेन्नई स्थित एक परिधान फैक्ट्री भी सम्बन्धित है।

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति ने सर्वाधिक महिलाओं की जीवन शैली को प्रभावित किया है ,पारिवारिक सम्बन्धों पारम्परिक मान्यताओं और देश–विदेश में कार्यरत पारिवारिक नातेदारों से सम्बन्ध बनाने में इस प्रौद्योगिकी ने महिलाओं को संबल

प्रदान किया है। इतना ही नहीं जो महिलायें पढ़–लिखकर अपना जीवन संवारना चाहती है ,उन्हे भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों से काफी सहायता प्राप्त हो रही है। आजकल रेडियो दूरदर्शन द्वारा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के व्याख्यान प्रायोजित किये जाते हैं जो अत्यधिक सारगर्भित होते हैं तथा सामान्य जीवन के लिये उपयोगी भी होते है। यदि महिलायें नियमित रूप से इन्हें देखती और सुनती है तो उन्हें घर बैठे बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त हो सकता है तथा उन्हें स्कूल या कॉलेज जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

सामान्य ज्ञान अर्थात जनरल नॉलेज ,आई.क्यू. आदि के दृष्टिकोण से भी सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यम महिलाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। टेलीवीजन और रेडियो शिक्षित और सामान्य शिक्षित सभी महिलाओं की ज्ञान पिपासा का समन करने में सक्षम हैं राजनैतिक ,धार्मिक ,वैज्ञानिक ,स्वास्थ्य ,बेरोजगारी ,आर्थिक या खेल सम्बन्धी सूचनाओं का श्रोत बन चुका टी 0 वी 0ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की महिलाओं का सबसे बढ़ा मित्र बन चुका है।

सूचना प्रौधोगिकी एवं महिलायें सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक समाजशास्त्री अध्ययन

व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में प्रशासनिक दृष्टि से डाउन साइजिंग अपने कर्मियों की संख्या कम की जा रही है। इसलिए अब अनेक लोग अपने गृह कार्यालयों से ही (स्पेशलाइन्ड सर्विसों) विशेषीकृत सेवाओं का कार्य करना उचित समझते हैं। इसमें सामान्यतः पति–पत्नी मिलकर काम कर रहे हैं। अब कम से कम यह पुरानी कहावत अर्थहीन हो गयी है कि" घर की महिला जब घर पर ही रहे तो घर का काम ही करेगी। "आज इन नवीनतम परिस्थितियों में सूचना प्रौद्योगिकी ने पत्नी कोपति का साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं को सशक्त बनाने की क्षमता है, जो उन्हें सूचना, शिक्षा और नौकरी के अवसर प्रदान करती है। हालाँकि यह मौजूदा लैंगिक असमानताओं को भी मजबूत कर सकता है जैसे कि लैंगिक वेतन अंतर और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नेतृत्व के पदों पर महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व।

महिलाओं पर सूचना प्रौद्योगिकी के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक गिग इकॉनमी के विकास को सुविधाजनक बनाने में इसकी भूमिका रही है। विशेष रूप से महिलाएं गिग इकॉनमी में लचीलेपन के कारण भाग लेने की अधिक संभावना रखती हैं। हालाँकि, गिग इकॉनमी भी नौकरी की सुरक्षा और लाभों की कमी जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश करती है।

महिलाओं ने सूचना प्रौद्योगिकी के विकास और अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महिलाएं प्रौद्योगिकी के विकास में शामिल रही हैं, लेकिन वे महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग की हिमायती भी रही हैं। प्रौद्योगिकी क्षेत्र में लैंगिक अंतर को दूर करने के लिए महिलाएं भी आंदोलनों में सबसे आगे रही हैं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं ने क्षेत्र में अन्य महिलाओं को सहायता और सलाह प्रदान करने के लिए नेटवर्क और संगठन बनाए हैं।

उन्होंने उन नीतियों और प्रथाओं पर भी जोर दिया है जो प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विविधता और समावेश को बढ़ावा देती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने की क्षमता है। हालाँकि, इसके लाभ समान रूप से वितरित नहीं किए गए हैं, और महिलाओं को प्रौद्योगिकी तक पहुँचने और उपयोग करने में कई बाधाओं का सामना करना

पड़ता है। सूचना प्रौद्योगिकी की पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए, इन बाधाओं को दूर करना और प्रौद्योगिकी के विकास, अपनाने और उपयोग में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना आवश्यक है। महिलाओं को प्रौद्योगिकी के भविष्य को आकार देने में शामिल होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह समाज में सभी को लाभान्वित करे।

साहित्य की समीक्षा

सुनीता सिंह ;2017द्ध महिलाओं को शताब्दियों से पुरूष की केवल जीवन संगनी माना गया है। उनका अपना कोई निजी अस्तित्व नहीं। ऐसा केवल भारत में ही नहीं पश्चिमी देशों में भी देखा जाता रहा है। यूरोप में 18 वीं शताब्दी में हुई प्रौद्योगिकी क्रान्ति के बाद भी स्थिति एवं विचारधारा में कोई अन्तर नहीं आया। विज्ञान एवं इंजीनियरिंग जैसे विषयों में कुछ प्रतिशत लड़कियां ही प्रवेश लेती थी ,यांत्रिकी एवं इंजीनियरिंग की शिक्षा महिलाओं के लिए सदैव कठिन कार्य माना गया ,क्योंकि इनके लिये महिलाओं को घर के बाहर जाकर कार्य करना पड़ता है ,क्योंकि स्त्री को घर की शोभा ' माना जाता था इसलिए उनके लिए यह कार्य बेहद मुश्किल मान लिया गया।

द्विवेदी(2018), सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया का एक महत्तवपूर्ण अंग है। बिना पुनरावलोकन किये शोधकर्ता दिशाहीन होता है ,इसके अभाव में हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जब तक हमें यह ज्ञात न हो कि शोध के क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है ,किस प्रकार से कार्य किया गया है तथा उसके क्या परिणाम निकले हैं ,तब तक हम न तो समस्या का निर्धारण कर सकते है और नं ही उसकी रूपरेखा तैयार कर ,कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं। अतः शोध कार्य की सलफता के लिए सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन अपरिहार्य है।

मारहन मार्टिन रू2017 ने कहा था इन्टरनेट के प्रारम्भिक समय से ही उस पर पुरूषों का प्रभुत्व रहा परन्तु हाल के वर्षों के दौरान इसमें लड़कियों और महिलाओं की संख्या बढ़ी है। यह स्वागत योग्य है क्योंकि पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक कुशलता से इन्टरनेट का प्रयोग करती हैं। उनकी संख्या में और अधिक बढ़त अपेक्षित है ,अन्यथा समाज के आर्थिक एवंशैक्षणिक वातावरण दुष्प्रभावित होगा।

रिकेर और साशरो 2018 के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अमेरिका में इन्टरनेट का उपयोग करने वालों में पुरूषों को पीछे छोड़ते हुए महिलाओं की संख्या अधिक हो चुकी है जो कि आशावादी भविष्य का प्रतीक है। चूंकि इन्टरनेट का श्रीगणेश अमेरिका से ही हुआ था ,इसलिए इसकी सम्भावनाएं प्रबल है कि शीघ्र ही अन्य देशों में भी अमेरिका की ही भाँति आई . टी .क्षेत्र में महिलाएं अपनी कामयाबी पुरूषों की अपेक्षा अधिक कुशलता से अर्जित कर लेंगी।

आई . बी . एम .2016 द्वारा चलाए गए एक सर्वेक्षण अध्ययन में इसकी पुष्टि की गयी कि विभिन्न व्यवसायों में लगे आई . सी . टी .के उपयोगकर्ताओं में महिलाओं की संख्या निश्चित रूप से पुरूषों से अधिक तो है ही साथ ही महिलाओं के कुशलतापूर्ण तौर – तरीकों से उद्यम भी अधिक लाभान्वित हो रहे।

असंतुलित अधिकार और असमानता बोध की जो गहरी पैठ महिलाओं में बनी हुई है ,उससे इस नई प्रौद्योगिकी के बाद भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए समय तो लगेगा ही उन्हें उपयुक्त सामाजिक समर्थन भी मिलना चाहिए। इन

विसंगतियों के बने रहने से प्रौद्योगिकी के साथ महिलाओं के सम्बन्धों में व्याप्त दोहरी मानसिकता की विडंबना को दूर कर पाना सम्भवतः कठिन होगा।

बैनर्जी एवं मित्तर 2017 के प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया है कि महिलाओं के कामकाज के अवसर सबसे पहले सिमटते है क्योंकि उनमें उन सरल कार्यों को करने की अधिक रूचि होती है जिनको आसानी से मशीनों द्वारा किया जा सकता है। महिलाओं में लचीलेपन का परम्परागत अभाव होता है परन्तु वस्तुतः इसका मूल कारण तो समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक परम्परा ही है। महिलाओं को केवल ' यह 'या ' वह 'करना सिखाया जाता है। पर क्यों किया जाना है ,यह सिखाने का कोई प्रयास नहीं किया जाता। उनको प्रेशर कूकर जैसे श्रम बचत में सहायक उपकरण इसलिए नहीं दिए जाते थे क्योंकि समाज में यह आम धारणा थी कि महिलाओं में टेक्नालॉजी की समुचित समझ का अभाव होता है।

वेडलीः 2018 ने अपने अध्ययन के सम्बन्ध मेंतमिल नाडु के करीमपुर के एक ब्राह्मण परिवार को काफी नजदीक से देखने – समझने का प्रयास किया उसने यह अनुभव किया कि इस परिवार में चार पीढ़ियों की महिलाओं की जीवन शैली ,आर्थिक स्थिति ,शिक्षा और आवश्यकताओं में बहुत अधिक विभिन्नता है। उसने तुलनात्मक रूप से यह अनुभव किया कि दादी – नानी की अपेक्षा नई पीढ़ी की महिलाओं के पास अधिक समय कीगुंजाइश है ,क्योंकि अब उनकी जीवन शैली परिष्कृत वैज्ञानिक उपकरणों से जुड़ गयी है। वाशिंग मशीन ,फ्रिज ,टी . वी . ,मिक्सी आदि के उपयोग के कारण बचे हुये समय का सदुपयोग आज की पीढ़ी अपने परिवार के हितार्थ इन्टरनेटवर्किंग में करना चाहती है।

सुश्री गोठोस्कर 2019 ने मुम्बई में टेलीवर्किंग महिलाओं के एक समूह का अध्ययन किया जो हाई टेक्नोलॉजी वाला कार्य कर रही थी किन्तु इसके बाद भी वे अपने प्रोफेशन के निचले पायदान पर ही थीं। घरेलू कार्य वर्कर बना रखा था किन्तु अपने प्रोफेशन में आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा उनके पास लगभग नहीं के बराबर था टेक्नोलॉजी ने उनको नॉन स्टाप उनमें नहीं के बराबर थी। भारतीय महिलाओं में सम्भावनाओं की धारणाएं सीमाबद्ध हुआ करती हैं और उनके इन विचारों में परिवर्तन लाने की पर्याप्त सम्भावनायें है। आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं को सहयोग देने वाले संगठनों की भूमिका उनके प्रति कैसी है। उच्च स्तर पर कार्य कर रही महिलाओं के पास स्वाधीनता भी है और अपनी जीवन शैली को अपने अनुसार ढालने के अधिकार भी हैं ,कुछ संस्थाओं ने जैसे –अहमदाबाद स्थित सेल्फ इम्प्लाइड वुमेन्स एसोसियशन(सेवा)और पश्चिम बंगाल के ग्रामीण बैंक ने अपने नीचे की श्रेणी में कार्य करने वाली सदस्यों को कुछ अधिक स्वाधीनता का लाभ दिया है और ऐसे ही संगठनों की आवश्यकता भी है। एक ऐसा ही उदाहरण लेटिन अमेरिकी देश गुयाना की ग्रामीण महिलाओं का है जिन्होंने अपने यहां एक कम्प्यूटर ऐडेड रिटेल चेन का सफलतापूर्वक स्वामित्व प्राप्त कर लिया क्योंकि इस संगठन में महिलाओं को जानबूझकर निचले स्तर पर रोके रखने के प्रयास किए जा रहे थे।

निष्कर्ष

अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं, जिनमें उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग शामिल है, जो पूरी आबादी का प्रतिनिधि नहीं हो सकता है। अध्ययन स्व–रिपोर्ट किए गए डेटा पर भी निर्भर करता है, जो पूर्वाग्रह के अधीन हो सकता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन एक विशिष्ट संदर्भ तक सीमित है और अन्य सेटिंग्स के लिए सामान्य नहीं हो सकता है। यह अध्ययन सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

में सूचना प्रौद्योगिकी और महिलाओं के बीच संबंधों में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। मिश्रित तरीकों का दृष्टिकोण सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँचने और उपयोग करने में महिलाओं के अनुभवों और धारणाओं की व्यापक खोज को सक्षम करेगा। इस अध्ययन के निष्कर्ष सूचना प्रौद्योगिकी और लिंग के प्रतिच्छेदन पर साहित्य के मौजूदा निकाय में योगदान देंगे और प्रौद्योगिकी के विकास, अपनाने और उपयोग में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियों और प्रथाओं को सूचित करेंगे।

संदर्भ

1. सुनीता सिंह ;2017द्धश सूचना प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिकारू एक समाजशास्त्रीय अध्ययनश https://ignited.in/I/a/150635

2ण द्विवेदी(2018), '' इंडिया ईयर बुक '' ,टाटा मैकग्रा –हिल एजुकेशन ,नई दिल्ली ,पृष्ठ 25–28

3ण मारहन मार्टिन रू2017 '' ग्रामीण विकास के तहत ग्रामीण विकास '' ,संकल्पना प्रकाशन कंपनी ,नई दिल्ली।

4ण रिकेर और साशरो 2018 '' लिंग और सहस्राब्दी विकास लक्ष्य '' ऑक्सफैम प्रकाशक ,पृष्ठ 13 ।

5ण आई . बी . एम .2016 '' आईसीटी के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना '' ,स्पाइडर प्रकाशन ,स्टॉकहोम।

6ण बैनर्जी एवं मित्तर 2017 '' लिंग और डिजिटल अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य '' ,ऋषि सेंटर फॉर रिसर्च इनोवेशन एंड साइंस पॉलिसी(2011), '' आईसीटी और भारतीय ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरणः हम किस पहल की पहल सीख सकते हैं ? '' ,हैदराबाद ,पृष्ठ 1–2 ।

7ण वेडलीः 2018 '' इंडिया ईयर बुक '' ,टाटा मैकग्रा –हिल एजुकेशन ,नई दिल्ली ,पृष्ठ 25–28

8ण सुश्री गोठोस्कर 2019 '' आगरा जिले के ग्राम क्लस्टर में स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की सामाजिक आर्थिक समझ '' ,आर्थिक और व्यापार समीक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ,तमिलनाडु

9ण ग्रामीण वसूली और विकास(2011)की फाउंडेशन , '' आगरा जिले का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन '' ,नई दिल्ली।

10ण गुप्ता बीबीआर(2012), '' पंचायत राज की भागीदारी और सशक्तिकरण '' ,ग्रामीण विकास मंत्रालय ,नई दिल्ली।

11ण ह्यूएर और सोफिया (2002), ''लीकी पाइपलाइनः विज्ञान में लिंग बाधाएं'' इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, पृष्ठ 37–38

12ण ह्यूएर, सोफिया और तात्जाना (2003), ''लिंग डिजिटल डिवाइड पर काबू पानेः महिलाओं की आईसीटी संभावित सशक्तिकरण को समझना'', इन्स्ट्रैड प्रकाशक, वाशिंगटन डीसी, पृष्ठ 47

13ण कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय निधि (2012), ''लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण'', नई दिल्ली।

14ण इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज (2013), आईसीटी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण '', वॉल्यूम संख्याः 2, पीजी 5 से 7